विचार बिन्दु

विश्व में अग्रणी भूमिका निभाने की आकांक्षा रखने वाला कोई भी देश शुद्ध या दीर्घकालीन अनुसंधान की उपेक्षा नहीं कर सकता। –होमी भाभा

एडीडी मनोविकार से पीड़ित आज की पीढ़ी

एडीडी यानी कि अटेंशन डेफिसिट डिसआर्डर आज के समय का सबसे अधिक प्रभावित करने वाला मनोविकार है और मजे की बात यह है कि आज सबसे अधिक प्रभावित भी इस मनोविकार से बड़े ही नहीं बच्चे होने लगे है। हालांकि विशेषज्ञ इस मनोविकार का एक कारण जेनेटिक भी मानने को तैयार है पर इसका सबसे बड़ा कारण सोशियल मीडिया की मायावी दुनिया है। इंटरनेट और सोशियल मीडिया के सकारात्मक प्रभावों से ज्यादा आज इन नकारात्मक प्रभावों को लेकर मनोविज्ञानी अधिक चिंतित है। कारण भी साफ है। सोशियल मीडिया की इस मायावी दुनिया में बच्चें, बुढ़े सभी उलझते जा रहे हैं। इसका सबसे नकारात्मक प्रभाव यह पड़ रहा है कि हमारी एकाग्रता कहीं बाधित हो रही है।

एडीडी से प्रभावित व्यक्ति किसी एक चीज पर फोकस नहीं कर पाता है और यही कारण है कि वह किसी एक काम को एकाग्रता से करते हुए अंतिम परिणाम तक नहीं पहुंचा पाता और उसका परिणाम यह होता है कि इससे प्रभावित व्यक्ति में कुंठा, नैराश्य, डिप्रेशन और इससे जुड़े अन्य विकार से प्रभावित हो जाता है और परिणाम सामने आता है अनावश्यक रिएक्शन, गुस्सा आदि आदि। इसमें हम केवल और केवल बच्चों या युवाओं को ही दोष नहीं दे सकते बल्कि देखा जाए तो इंटरनेट और सोशियल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के प्रभाव से ग्रसित लोग इन हालातों से दो–चार होते जा रहे हैं। चिंतनीय यह है कि फोकस नाम की चीज खोती जा रही है और उसके स्थान पर मानसिक भटकाव लेता जा रहा है। होता यह है कि एक काम करने की सोचते हैं उतनी देर में दूसरे काम पर ध्यान चला जाता है तो कुछ ही देर में तीसरे काम को पहले करने की सोचने लगते हैं। इस सबका बड़ा कारण खासतौर से इलेक्ट्रोनिक गजेट्स और लेपटॉप के माध्यम से इंटरनेट की दुनिया को अत्यधिक समय देने का यह साइड इफेक्ट होने लगा है। इससे लगभग मिलती–जुलती कहा जाए तो यह एडीएचडी यानी कि अटेंशन डेफिसिट हाईपरएक्टिविटी डिस आर्डर की स्थिति होती है। बिना सोचे–समझे रिएक्शन, तनाव, काम में फोकस नहीं कर पाना, डिप्रेशन में रहना आदि का कारण मोटे रुप से एडीडी यानी के रुप में देखा जा सकता है।

मजे की बात यह है कि जिस तरह से एडीडी मनोविकार का विस्तार होता जा रहा है यानी कि जिस तरह से अधिक से अधिक लोग इसके मकड़जाल में उलझते जा रहे हैं वह अपने आप में गंभीर होने के साथ ही अत्यधिक चिंतनीय भी है। एक दो नहीं इन हालातों का पूरे समाज पर असर पड़ रहा है। आज दूध पीते बच्चे को भी मोबाईल थमाकर शांत रखने की प्रवृति आम होती जा रही है उसके दुष्परिणाम सामने आने में देर नहीं लगेगी। बच्चें हाईपर होते जा रहे हैं। जब बच्चों में ही यह होने लगा है तो रात–दिन जिस तरह से सोशियल मीडिया के प्लेटफार्म में लगे रहते हैं उनकी क्या मनोदशा हो जाएगी यह किसी से छुपी हुई नहीं होनी चाहिए।

दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में हुए एक अध्ययन में भी साफ हो गया है कि आज गेमिंग, सोशियल मीडिया और ओटीटी प्लेटफार्म के आदी होते जा रहे हैं। इसका परिणाम यह होता जा रहा है कि समाज संवेदनहीन होता जा रहा है। हमेशा तनाव, डिप्रेशन, आक्रामकता, गुस्सेल, बदले की भावना आदि आम है। ऐसे में मनोविज्ञानियों के सामने नई चुनौती आ जाती है। यह असर कमोबेस समान रुप से देखा जा रहा है। यह कोई हमारे देश की समस्या हो, ऐसा भी नहीं हैं अपितु दुनिया के लगभग सभी देशों में यही हो रहा है।

मनोविश्लेषकों के अनुसार यह एक तरह की न्यूरोप्लास्टिसिटी है। देखा जाए तो एक दूसरे से तत्काल संवाद कायम करने का माध्यम स्मार्टफोन, सोशियल मीडिया और इंटरनेट पर परोसी जाने वाली सामग्री का सर्वाधिक दुष्प्रभाव सीधे हमारी ही नहीं बच्चों की मनोदशा को प्रभावित कर रहा है। तकनीक का इस तरह का दुष्प्रभाव संभवतः इतिहास में भी पहले कभी नहीं रहा है। आज हम हर समस्या का समाधान स्मार्टफोन और इंटरनेट को मानने लगे हैं। बच्चा रो रहा है या किसी बात के लिए जिद कर रहा है या चिड़चिड़ा हो रहा है तो माताएं या परिवार के कोई भी सदस्य बच्चें को चुप कराने या मन बहलाव और खास यह कि बच्चे को व्यस्त रखने के लिए मोबाइल संभला देते हैं। जबकि मोबाइल के दुष्प्रभाव हमारे सामने आने लगे हैं।

अमेरिका में पिछले दिनों हुए एक सर्वे में सामने आया कि मोबाइल फोन, टेबलेट, वीडियो गेम या अन्य इस तरह के साधन के उपयोग से गुस्सेल होते जा रहे हैं। मारधाड़, हमेशा गुस्से में रहने, तनाव में रहने और जिद्दी होना आज आम होता जा रहा है। दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में हुए एक अध्ययन में भी साफ हो गया है कि आज गेमिंग, सोशियल मीडिया और ओटीटी प्लेटफार्म के आदी होते जा रहे हैं। इसका परिणाम यह होता जा रहा है कि समाज संवेदनहीन होता जा रहा है। हमेशा तनाव, डिप्रेशन, आक्रामकता, गुस्सेल, बदले की भावना आदि आम है। ऐसे में मनोविज्ञानियों के सामने नई चुनौती आ जाती है। यह असर कमोबेस समान रुप से देखा जा रहा है। यह कोई हमारे देश की समस्या हो, ऐसा भी नहीं हैं अपितु दुनिया के लगभग सभी देशों में यही हो रहा है। अमेरिका में किये गये एक अध्ययन में भी यही उभर कर आया है।

मनोविश्लेषकों के अनुसार 100 में से 5 से 6 बच्चे इस मनोविकार के शिकार हो रहे हैं। सर्वे में यह भी साफ हुआ है कि बच्चियों की तुलना में बच्चे यानी कि मेल चाइल्ड अधिक प्रभावित हो रहे हैं। ऐसे में समस्या अधिक गंभीर होती जा रही है। भारत ही नहीं दुनिया के अधिकांश देश इस समस्या से दो चार हो रहे हैं। यही कारण है कि इस समस्या का समाधान बच्चों पर कुछ हद तक सोशियल मीडिया और इंटरनेट के प्रयोग पर अंकुश लगाने पर गंभीर प्रयास ही नहीं कई देशों में तो सख्त कदम उठाये जाने लगे हैं। हांलाकि इंटरनेट के उपयोग को बच्चों के लिए सीमित या बाधित करना एक उपाय हो सकता है पर यह कोई अंतिम समाधान नहीं हो सकता। बच्चों की एकाग्रता को बनाये रखने के लिए कोई ठोस व कारगर उपाय खोजने ही होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 14 नवम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, अश्विनी नक्षत्र रात्रि 12:33 तक, सिद्धि योग दिन 11:30 तक, तैतिल करण प्रातः 9:44 तक, चन्द्रमा मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–तुला, चन्द्रमा–मेष, मंगल–कर्क, बुध–वृश्चिक, गुरू–वृष, शुक्र–धनु, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 12:33 तक है। रवियोग रात्रि 12:33 तक रहेगा। आज राधा वल्लभ महोत्सव, काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, वैकुण्ठ चतुरदशी है। चतुरदशी तिथि का क्षय हुआ है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:10 तक, चर 10:51 से 12:11 तक, लाभ–अमृत 12:11 से 2:52 तक, शुभ 4:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:50, सूर्यास्त 5:33

मेष
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मिथुन
आर्थिक स्थिति ठीक में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक में सुधार होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

सिंह
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

मकर
घर–परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मीन
आर्थिक कारणों से अटका हुआ धन प्राप्त होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

भारत की आध्यात्मिक व धार्मिक माला के बेहद चमकदार मणके–गुरू नानक देव जी

गुरूनानक देव जी के 555वें प्रकाश पर्व के अवसर पर...

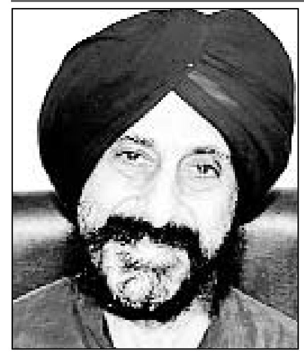

जसबीर सिंह

जब देश विदेश में गुरूनानक देव जी का 555वां प्रकाश पर्व पूरी श्रद्धा व उल्लास से मनाया जा रहा है उस समय उनका जीवन, आचरण व संदेश वर्तमान काल के संदर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। गुरूनानक देव जी भारत की अनोखी, अनूठी व बेजोड़ आध्यात्मिक माला के चमकदार मणके हैं व उनके द्वारा स्थापित सिख परम्परा पर हम भारतीयों को गर्व है। उन्होंने भारत की सनातन परम्परा के संवाद व दूसरे पंथों व मतों को समझने तथा उनके उत्कर्ष्टतम सिद्धान्तों को उदार मन से स्वीकारने के सिद्धान्त को प्रोत्साहित किया। उनकी वाणी है **''जब लग दुनिया रहिये नानक, किछु सुणीऐ किछु कहिअे''** अर्थात् जब तक संसार में रहो कुछ सुनो और कुछ कहो। अनेक भूगोलवेत्ताओं के अनुसार पुराण काल में पूरे एशिया या उसके बहुत बड़े हिस्से को जंबूद्वीप के नाम से जाना जाता था। भारत इस जंबूद्वीप का एक हिस्सा था। तीस वर्ष की आयु में 1499 से 1521 के मध्य अपनी चार उदासियों (लम्बी यात्राओं) में पुराणों में वर्णित इस जंबूद्वीप का शायद ही कोई ऐसा कोना हो जो गुरूनानक ने अपनी पद यात्राओं से न नापा हो। उनकी इन यात्राओं का उद्देश्य साधुओं, मनीषीयों व सूफियों का संग व दिव्य भक्ति का प्रचार था। कैलाश मानसरोवर से लेकर हरिद्वार, अयोध्या, काशी जहां कबीर चबूतरे पर उनका कबीर जी से संवाद भी हुआ, मणीकरण, लद्दाख, तिब्बत, भूटान, गोरखमता, नालन्दा, कामरूप, बीकानेर, अजमेर, आबू, सिक्किम, अरूणाचल, कालीघाट (वर्तमान कोलकत्ता), तवांग के आगे बूमला स्थित पर्वत की चोटी, यरूशलम, शंघाई, अदन, फिलस्तीन, मिस्त्र, सूडान, अबैसीनिया, सीरिया, तुर्की, अजरबैजान, ईरान, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान, बगदाद व मक्का तक गये। विभिन्न धार्मिक परम्पराओं के संतों, मनीषियों, सूफियों व लामाओं से संवाद किया। इतने दुर्गम व दूर के अनेकोनेक स्थानों पर जाने के कारण उन्हें तिब्बत में नानक लामा, रूस में नानक कामदार, नेपाल में नानक ऋषि, भूटान में नानक रिपोचिया, श्रीलंका में नानकचार्या, चीन में नानक फूसा, ईराक में नानक पीर, मिस्त्र में नानक वली, पाकिस्तान में नानक शाह व सऊदी अरब में प्रथम पातशाही वली हिंद के नाम से जाना जाता है। भारत के गौरवशाली इतिहास में आदि शंकराचार्या के पश्चात् गुरूनानक देव जी द्वारा 22 वर्षों में लगभग 28000 किलोमीटर की पदयात्रा (उदासियां) की गयी।

गुरू जी अपनी यात्राओं में सैकड़ों प्रकार के लोगों से मिले। विरोधियों से भी व प्रशंसकों से भी, चोरों, ठगों व लुटेरों से भी, पंडितों, मनीषियों, योगियों व तान्त्रिकों से भी, बौद्ध लामाओं से भी, सूफियों, शेखों, काजियों और मुल्लाओं से भी। सर्वत्र उनके मृदुल स्वभाव व सत्यशील आचरण ने विजय पाई। देश के मध्यकालीन संतों में गुरूनानक ने सुधा लेप का काम किया। यह आश्चर्य की बात है कि विचार और आचार की दुनिया में इतनी बड़ी क्रान्ति लाने वाले गुरूनानक ने बिना किसी का दिल दुखाए, बिना किसी पर आघात किये नयी संजीवनी धारा से प्राणीमात्र को उल्लासित भी किया व प्रेरित भी। गुरूनानक देव जी ने उस समय तक के महान संतों व सूफियों की वाणी को समझा और आचरण में उतारा। इसी का परिणाम था कि गुरू ग्रंथ साहिब में 6 सिख गुरूओं के अतिरिक्त 30 अन्य पंथों व धर्मो के संतों जैसे– धन्ना जी, पीपा जी, कबीर जी, रैदास जी, त्रिलोचन जी, दादू जी, बाबा फरीद जी, नामदेव जी आदि की वाणी को गुरूग्रंथ साहिब में शामिल किया गया।

उन्होंने ऊँच–नीच के भेद को नकारते हुय सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना, जातियों की संकीर्ण दीवारों को तोड़ कर एक ही स्थान पर संगत करना तथा एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन मिल–बैठकर ग्रहण करने की 'लंगर' परम्परा की शुरूआत की, जिसे आज भी सिख परम्परा में पूरी शिद्दत के साथ अनवरत निभाया जा रहा है। उन्होंने अपनी वाणी में कहा भी **''सगल बनसपति महि बैसंतर सगल दूध महि घीआ।। ऊँच नीच महि जोत समाणी घटि घटि माघउ जीआ''**। अर्थात्– जैसे सारी वनस्पति में अग्नि का निवास है और सारे दूध में घी विद्यमान होता है वैसे ही ऊँच–नीच, अच्छे–बुरे सबमें प्रभु की ज्योति समाई हुयी है और प्रत्येक हृदय में वह प्रभु बसता है।

स्वयं गुरूनानक देव जी 1522 में करतारपुर साहिब आकर रहने लगने के पश्चात् 1539 तक खेती भी करते रहे। भावभीने और सामान्य ज्ञान से ओतप्रोत गुरूनानक के सैकड़ों शबद हैं जैसे– **''रैन गवाई सोये के दिवस गवाया खाये, हीरेजैसा जन्म है कौडी बदले जाये'', ''घर में घर दिखाए दे, सो सतगुरू पुरूख सुजान'', ''न ओह मरे न ठागे जाये जिनके राम वसे मन माहि''** जिन्होंने भक्तों का मन मोह लिया क्योंकि उनमें अंत:करण को छू लेने की अद्वितीय क्षमता थी। ओशो कहते हैं–**''नानक ने परमात्मा को गा–गाकर पाया। गीतों से पटा है मार्ग नानक का। नानक ने न योग किया, न तप किया, न ध्यान किया। लेकिन गाया उन्होंने इतने प्राण से कि गीत ही ध्यान हो गये, गीत ही योग हो गये, गीत ही तप हो गये। नानक की साधना अभिप्सा, प्यास व समग्रता की साधना है। वह बाहरी रूढ़ियों या कर्मकाण्ड पर नहीं टिकी हुयी।''**

गुरूनानक सहित सभी सिख गुरूओं में भारतीय शास्त्रीय संगीत की अपार समझ थी जिस कारण गुरू ग्रंथ साहिब की पूरी वाणी को उपयुक्त रागों में निबद्ध किया गया ताकि आध्यात्मिक संदेश संगीत के संग घुल कर आत्मा को शान्ति व आनंदमय शीतलता प्रदान कर सके। गुरूनानक ने प्रकृति और पर्यावरण को सम्मान देते हुए (जो आज अत्यन्त प्रासंगिक है) अपनी वाणी में कहा **''पवण गुरू, पाणी पिता, माता धरति महतु''** अर्थात् हमारा अस्तित्व, हमारी समस्त इंद्रियां व शब्द पवन से ही उत्पन्न होते हैं अत: पवण गुरू है।

देश की उस समय की परिस्थिति व बाहरी हमलावरों द्वारा किये जा रहे अत्याचारों पर शासकों से बगैर डरे गुरूनानक ने ही गत 2000 वर्षों में पहली बार भारत के लिये हिंदुस्तान शब्द का उपयोग करते हुये अपनी वाणी में कहा–''खुरासान खसमाना कीआ हिंदुस्तान डराइआ, आपै दोसु न देई करता जमु कर मुगल चड़ाइआ, एती मार पई करलाणै तैं की दरद न आइआ''। अर्थात्–खुरासान से आये हुये आक्रान्ताओं के अत्याचार से देश के लोग डरे हुये व पीड़ित हैं और हे ईश्वर आपको जनता के दर्द का अहसास क्यों नहीं हो रहा? नारी को बराबरी व सम्मान देना गुरू नानक का समसामयिक संदेश था। समाज में सती प्रथा, पर्दा प्रथा व जन्म के समय ही कन्या हत्या की कुरीतियां व कुप्रथाऐं प्रचलित थी। कन्या के जन्म को अभिशाप माना जाता था। नानक ने इसका विरोध करते हुये कहा– ''सो क्यूं मंदा आखिये जित जमै राजान्'' अर्थात् उस स्त्री को तुम हीन कैसे कह सकते हो जो राजाओं, महाराजाओं और मनीषियों को जन्म देती है। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति या परिवार अपनी नवजात जन्मी कन्या की हत्या करता है उसके साथ बेटी और रोटी का रिश्ता मत रखो। सिख परम्परा में गुरूनानक का विशिष्ट, विलक्षण व अद्वितीय स्थान है इसलिये बाद के नौ गुरूओं को क्रमश: दूसरा, तीसरा, चौथा... दसवां नानक कह कर सम्बोधित किया जाता है। इसी परम्परा के दसवें नानक अर्थात् गुरू गोबिन्द सिंह जी ने गुरू ग्रन्थ साहिब का संकलन करके सिखों को इस ग्रन्थ को ही भविष्य में अपना साक्षात् ग्यारहवां गुरू मानने का निर्देश दिया। दिनकर जी अपने ग्रन्थ ''संस्कृति के चार अध्याय'' में लिखते हैं कि गुरूनानक की सबसे बड़ी शिक्षा यह थी कि–परमात्मा विश्व के कण–कण में व्याप्त है।

इसलिये निखिल सृष्टि को ब्रह्ममय समझकर प्रणाम करो। गुरूनानक द्वारा प्रारम्भ सिख परम्परा शुरू से ही प्रगतिशील रही तथा इसमें जातपात, ऊँच–नीच, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, शराब और तम्बाकू का वर्जन किया गया। उर्दू व फारसी के प्रसिद्ध शायर डॉ. मोहम्मद इकबाल ने गुरूनानक के संदेश का मूल्यांकन करते हुये कहा था– ''फिर उठी आखिर सदा तौहीद की पंजाब से हिंद को इक मर्दे कामिल ने जगाया ख्वाब से'' पचास साल पहले डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने गुरूनानक को स्मरण करते हुये लिखा था– ''पाँच सौ वर्ष बीत गये। भारत वर्ष के विशाल आकाश के नीचे न जाने कितनी घटनाऐं घटी, धरती को न जाने कितनी बार रक्त से सिक्त होना पड़ा, अन्याय और शोषण ने न जाने कितने तांडव किये, पर नानक के प्रकाश की कार्तिकी पूर्णिमा का चांद अपनी स्निग्ध शोभा उसी प्रकार बिखेर रहा है, नानक की पवित्र वाणी इतनी ही स्निग्ध ज्योति विकीर्ण कर रही है। उतरो महान गुरो एक बार और उतरो। हम आपकी ऊँचाई तक नहीं पहुँच रहे हैं। आज भी मनुष्य की क्षुद्र अहमिका विक्षिप्त नर्तन कर रही है, आज भी भय और लोभ की आशंका और तृष्णा की धमा चौकड़ी व्याप्त है। एक बार और आओ, रक्षा करो मनुष्येत्तर की, धर्म की, सत्य की। बड़ी आशा और विश्वास से हम आपका स्मरण कर रहे हैं। जय हो आपकी अमर वाणियों की, जय हो आपकी शरणागीत की, जय हो आपकी निर्मल पवित्र स्मृति की, जय हो, जय हो।'' जब देश गुरूनानक देव जी का 555वाँ प्रकाश पर्व मना रहा है तो डॉ. द्विवेदी के ये उदगार वास्तविक रूप से उतने ही प्रासंगिक हैं।

–जसबीर सिंह,
पूर्व अध्यक्ष राजस्थान
अल्पसंख्यक आयोग व राष्ट्रीय
महामंत्री, राष्ट्रीय सुरक्षा
जागरण मंच

वासुदेव देवनानी ने इंडोनेशिया के लोगों से संवाद किया

- भारत और इण्डोनेशिया के सांस्कृतिक एवं वाणिज्यिक संबंध प्रगाढ़ : देवनानी
- ''रामायण व महाभारत की कहानियां इण्डोनेशियाई लोक कला का स्त्रोत''

अजमेर, (कासं)। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बुधवार को सिंगापुर रवाना होने से पहले बाली में भारत के महावाणिज्य दूतावास में आयोजित समारोह में भारत और इण्डोनेशिया के लोगों को संबोधित किया। वहां लोगों ने देवनानी का सम्मान किया।

देवनानी ने कहा है कि भारत और इण्डोनेशिया के मध्य साझा सांस्कृतिक विरासत होने के साथ व्यापारिक संबंध भी प्रगाढ़ हैं। उन्होंने कहा कि दोनों देशों में सांस्कृतिक व वाणिज्यिक संबंध की घनिष्ठता बहुत समय से है। रामायण व महाभारत की कहानियां इण्डोनेशिया में लोक कला व नाटकों का स्त्रोत है। देवनानी ने कहा कि साझा सांस्कृतिक विरासत, औपनिवेशिक इतिहास और राजनैतिक सम्प्रंभुता दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों पर एकीकृत प्रभाव डालते हैं। देवनानी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल से दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय संबंधों में एक नये युग की शुरूआत हुई है। नई व्यापक रणनीतिक साझेदारी से विभिन्न क्षेत्रों में दोनों देशों का सहयोग बढ़ा है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के मध्य नियमित रूप से संसदीय आदान–प्रदान भी होते हैं। देवनानी ने कहा कि रामायण व महाभारत की कहानियां इंडोनेशिया में नाटक व लोक कला का स्रोत है। यहां भारतीय संगीत, नृत्य कला के साथ–साथ योग को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत के अनेक ग्रंथों पर यहां सांस्कृतिक शोध होता है। भारतीय संस्कृति व चिंतन यह रचा–बसा हुआ है। देवनानी के सम्मान में बाली में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। देवनानी का काउंसलेट जनरल ऑफ इंडिया शशांक विक्रम ने पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया। देवनानी ने दूतावास का अवलोकन किया और अधिकारियों से परिचय लिया।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बाली में भारत और इण्डोनेशिया के लोगों को संबोधित किया।

अंतर्राष्ट्रीय पुष्कर मेले में जागरूकता अभियान का आयोजन

अजमेर, (कासं)। राजस्थान समग्र कल्याण संस्थान के ''हर वॉइस : स्टॉप वायलेंस अगेंस्ट वीमेन'' परियोजना के तहत इस वर्ष भी अंतरराष्ट्रीय पुष्कर मेले में जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मेले में घरेलू और विदेशी पर्यटकों की भीड़ में बाल विवाह और महिला हिंसा जैसे सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाने का प्रयास किया गया, जिसमें लोगों की मानसिकता में सकारात्मक बदलाव लाने का उद्देश्य था।

पुष्कर मेले में आयोजित इस अभियान के दौरान विभिन्न आकर्षक गतिविधियों का आयोजन किया गया जैसे रोड शो, हस्ताक्षर अभियान, ऊँट गाड़ी पर जागरूकता संदेश प्रसारित करना, और ''माय सेल्फी'' जैसे फोटो अभियान जिसमें पर्यटकों और स्थानीय लोगों ने बाल विवाह और महिला हिंसा के खिलाफ अपने समर्थन का संदेश दिया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से संस्था के प्रतिनिधियों में चंदू गिरी गोस्वामी, मंजू मेघवंशी, तोताराम उदयवाल, सुरभि कलोसिया, और सुमन मेघवंशी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पुष्कर मेले में बाल विवाह और महिला हिंसा जैसे मुद्दों पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित हुये।

धर्मेंद्र राठौड़ ने पुष्कर मेले की व्यवस्थाओं का जायजा लिया : – पूर्व आरटीडीसी अध्यक्ष धर्मेंद्र राठौड़ ने बुधवार को अंतरराष्ट्रीय पुष्कर मेले की व्यवस्थाओं का जायजा लिया और मेले में पशु नस्ल को करीबी से देखा। उन्होंने अश्व और गोवंश नस्ल को देख कर पशुपालक से बातचीत की। बातचीत कर उनके व्यवसाय और मेले के दौरान मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी ली। राठौड़ ने पशु पालन विभाग के ज्वॉइन डायरेक्टर डॉक्टर सुनील घीया से मेले की व्यवस्थाओं की जानकारी ली।

इस दौरान पूर्व आरटीडीसी अध्यक्ष धर्मेंद्र राठौड़ ने कहा कि आज मैने पुष्कर मेला क्षेत्र में पशु नस्ल को देखा और पशुपालकों से बातचीत कर उनसे सुविधाओं से संबंधित जानकारी ली। उन्होंने कहा कि पुष्कर मेले में देश विदेश के पर्यटकों और पशुपालकों के लिए राज्य सरकार ने जो व्यवस्थाएं की है, वो फिलहाल ठीक नजर आई है। पुष्कर के ही जल संसाधन मंत्री सुरेश रावत हैं। मेले में आने वाले श्रद्धालुओं और पशुपालकों को बेहतर सुविधाएं मिले, उनको किसी प्रकार की परेशानी न हो।

माशिबो में परीक्षा केंद्र निर्धारण समिति की बैठकें शुरू

अजमेर, (कासं)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में वर्ष 2025 की परीक्षाओं के लिए केन्द्र निर्धारण समिति की बैठकों का दौर बुधवार से शुरू हो गया। बैठकें 28 नवम्बर तक चलेंगी। पहले दिन बारां, उदयपुर व सलूम्बर की बैठक आयोजित की गई।

बोर्ड सचिव कैलाश चन्द्र शर्मा ने बताया कि आगामी वर्ष 2025 मंय होने वाली सैकण्डरी व सीनियर सैकण्डरी बोर्ड परीक्षा के लिए केन्द्र निर्धारण समिति की बैठकें आयोजित की जा रही हैं। पहले दिन बारां, उदयपुर व सलूम्बर की बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिला शिक्षा अधिकारियों की ओर से 15 सुझाव प्रस्तुत किए गए। इन सुझावों में परीक्षा केन्द्रों में बदलाव, समायोजन एवं अन्य सुझाव शामिल थे। बोर्ड का प्रयास है कि किसी भी जिले में परिक्षार्थी को परीक्षा देने के लिए 10 किलोमीटर से ज्यादा सफर तय नहीं करना पड़े। इस दूरी के भीतर ही परीक्षार्थी का परीक्षा केन्द्र हो। एक परीक्षा केन्द्र पर सैकण्डरी के 80 एवं उच्च माध्यमिक के कम से कम 40 विद्यार्थी परीक्षा में शामिल हों।बैठक में मुख्य परीक्षा नियंत्रक राजेश निर्वाण, उप निदेशक गीता पलासिया एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।